साबरमती आश्रम

साबरमती आश्रम टाउन हॉल से चार मील की दूरी पर आश्रम रोड से सटी साबरमती नदी के तट पर अहमदाबाद (गुजरात) के साबरमती उपनगर में स्थित है। यह महात्मा गांधी के आवासों में से एक था जहां वे अपनी पत्नी कस्तूरबा गांधी के साथ बारह वर्ष रहे। .
12 मार्च 1930 को गांधीजी ने नमक सत्याग्रह के लिए दांडी मार्च का नेतृत्व यहीं से किया था। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर इस मार्च के महत्वपूर्ण प्रभाव को देखते हुए इस आश्रम को भारत सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय स्मारक के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।

कांकरिया झील

कांकरिया झील अहमदाबाद की सबसे बड़ी झीलों में से एक है। इस झील के सामने चिड़ियाघर, टॉय ट्रेन, किड्स सिटी, सीमित गुब्बारे की सवारी, नाव की सवारी और वाटर पार्क, फूड स्टॉल और मनोरंजन की सुविधाएं जैसे कई सार्वजनिक / पर्यटकों के आकर्षण केंद्र है जो इसके चारों ओर विकसित किया गए हैं। यहाँ दिसंबर के अंतिम सप्ताह में एक साप्ताहिक उत्सव कांकरिया कार्निवल आयोजित किया जाता है। कार्निवाल के दौरान कई सांस्कृतिक, कला और सामाजिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। वर्तमान में यह पर्यटकों के लिए एक आकर्षण के रूप में विकसित किया जा रहा है.

केलिको वस्त्र संग्रहालय

पिछली पाँच सदियों से व्याप्त भारतीय हस्तशिल्प वस्त्रों का अनुपम संग्रह है जो भारतीय और अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान विद्वानों एवं पर्यटकों को बड़ी संख्या में आकर्षित करता है।

सरदार पटेल स्टेडियम

यह मोटेरा में स्थित है। यह 54,000 की क्षमता के साथ राज्य में सबसे बड़ा स्टेडियम है। क्रिकेट टेस्ट मैच और वनडे मैच यहां खेले जाते हैं।

अडालज की वाव (बावड़ी)

अहमदाबाद के अडालज गाँव में स्थित यह एक अद्वितीय हिन्दू "जल भवन" है। इसका निर्माण राजा वीरसिंह वाघेला की पत्नी रानी लाल बा द्वारा 1499 में करवाया गया था। यह बावड़ी पाँच मंज़िला जटिल नक्काशीदार है। अडालज की वाव पर्यटकों को बड़ी संख्या को आकर्षित करती है।

मोढेरा सूर्य मंदिर

यह गुजरात के मोढेरा में स्थित सूर्य भगवान को समर्पित एक हिंदू सूर्य मंदिर है। यह सोलंकी वंश के राजा भीमदेव द्वारा 1026 ई. में बनावाया गया था। इस मंदिर में मौजूद मूर्तियों और वास्तुकला इतने वर्षों के बाद आज भी शानदार हैं। वर्तमान में यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की देखरेख में है।

अक्षरधाम

यह गांधीनगर में स्थित गुजरात के सबसे बड़े (स्वामीनारायण संप्रदाय के मंदिरों में से एक है। मंदिर परिसर 23 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है जो एक ही स्थान पर प्रार्थना, कला, वास्तुकला, शिक्षा, प्रदर्शनी और अनुसंधान का संगम है।

कच्छ का विशाल रण

यह पाकिस्तान के सिंध प्रांत की सीमा से लगा हुआ गुजरात के कच्छ जिले के थार रेगिस्तान में स्थित एक मौसमी क्षारीय क्षेत्र है। इसका आकार लगभग 7,505.22 वर्ग किलोमीटर है और दुनिया का सबसे बड़ा नमक रेगिस्तान है। गुजरात सरकार द्वारा सर्दी के मौसम के प्रारम्भ में यहाँ एक वार्षिक उत्सव आयोजित किया जाता है जिसे रण उत्सव (रण का त्योहार) के नाम से जाना जाता है। पर्यटक यहाँ रण के विभिन्न स्थलों को देखने के साथ ही स्थानीय संस्कृति, भोजन और आतिथ्य का आनंद ले सकते हैं।

सिद्दी सैयद मस्जिद:

इसका निर्माण सन 1573 में गुजरात सल्तनत के अंतिम सुल्तान शम्सुउद्दीन मुजफ्फर शाह तृतीय के सेनापति बिलाल झाझर के एक अबीसीनीयन सहयोगी सीदी सय्यद द्वारा करवाया गया। यह अपनी दोनो ओर तथा पीछे की तरफ लगी दस खूबसुरत नक्शीदार पत्थर की जालियों के लिए प्रसिद्ध है। सिद्दी सैयद की जाली आज अहमदाबाद की पहचान बन चुकी है। भारतीय प्रबंध संस्थान अहमदाबाद के लोगों की डिजाइन की प्रेरण भी इसी से ली गई है।

साबरमती रिवर फ्रंट :

साबरमती नदी के तटों को सँवारने की एक अद्वितीय परियोजना साबरमती रिवर फ्रंट डेवलपमेंट के रूप में प्रारम्भ की गई है। इस परियोजना के अंतर्गत साबरमती नदी के दोनों किनारों पर 10 किलोमीटर लंबा पथ एवं उद्यान विकसित किए जा रहे हैं।

रानी की वाव:

यह गुजरात के पाटन शहर में स्थित एक प्रसिद्ध बावडी है। इसका निर्माण 1050 में अन्हिलवाड पाटन के सोलंकी वंस के संस्थापक मूलराज के पुत्र भीमदेव प्रथम (1022-1063) की स्मृति ने उसकी विधवा रानी उदयमती द्वारा करवाया गया। पचास-साठ वर्षों पूर्व तक इसके आस पास आयुर्वेदिक वनस्पतियों की बहुलता के कारण इस बावडी का जल बुखार आदि रोगों में आरामदायक था।